B.A part II Paper I
16/05/2020

Indian & Western Ethics

Dr. Anita Kr. Gupta
J.K. College Biraul

'Jivan mukti' & 'Vidhayamukti'
जीवनमुक्ति. (विदेहमुक्ति)

December 2010

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

27 THU

शंकर के अनुसार मोक्षावस्था में कोई परिवर्तन नहीं होता है। मोक्ष दुःख के अभाव की अवस्था नहीं है बल्कि भावात्मक अवस्था भी है। इस अवस्था में जीव एवं ब्रह्म एकाकार ~~मिथ्या अन्तर समाप्त~~ हो जाता है। ब्रह्म आनन्दमय है, इसी कारण मोक्ष को भी आनन्दमय कहा गया है। मोक्ष की अवस्था में जीव एवं ब्रह्म का मिथ्या अन्तर समाप्त हो जाता है तथा ऐसा होने पर बन्धन समाप्त हो जाता है। मोक्ष का साक्षात अनुभव होता है।

शंकर ने मुक्ति के दो भेदों को स्वीकार किया है :-

जीवनमुक्ति (Jivanmukti)

मोक्ष के बाद भी शरीर कायम रह सकता है क्योंकि शरीर प्रारब्ध कर्मों का फल है। मुक्तात्मा

28 FRI

कभी अपने को शरीर नहीं समझता, जगत का मिथ्या प्रपंच उसके समान रहता है। सांसारिक विषयों के लिए उसे तृष्णा नहीं होती है, कोई दुःख उसे व्याप्त नहीं करता है। संसार में रहते हुए भी वह निर्लिप्त रहता है। इसे ही जीवनमुक्त अवस्था कहते हैं। यहाँ जीवात्मा में ही मुक्ति प्राप्त होती है। जीवन मुक्त व्यक्ति जगत में रहते हुए भी जगत प्रपंच से प्रभावित नहीं होता है। सांसारिक कर्मों में भाग लेने के बावजूद भी वह बन्धन में नहीं पड़ता है क्योंकि जीवन मुक्त व्यक्ति के कर्म अनासक्त भाव से संपादित होते हैं।

Notes

February 2011

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28					

विदेहमुक्ति (Vidhayamukti)

29 SAT

शंकर ने तीन प्रकार के कर्मों को स्वीकार किया है :

- संचित :- पूर्वकाल से जमा कर्म।
- प्रारब्ध :- पूर्वकाल के कर्म जिनका फल मिलना शुरू है।
- क्रियमाण :- इसे संचीयमान भी कहते हैं। इस जीवन के नूतन कर्म जो संग्रहित हो रहे हैं।

तत्वज्ञान के द्वारा संचित कर्म का नाश हो जाता है तथा क्रियमाण कर्म का भी निवारण हो जाता है तथा पुनर्जन्म की संभावना समाप्त हो जाती है और तब मोक्ष की प्राप्ति होती है। जब प्रारब्ध कर्म की शक्ति समाप्त हो जाती है, शरीर इसके फल का भोग कर लेता है तब स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर का अंत हो जाता है तथा इस अवस्था को विदेहमुक्ति कहते हैं। इसकी प्राप्ति मृत्यु के बाद

30 SUN

होती है।

पारमार्थिक दृष्टि से मुक्ति न तो उत्पन्न होती है, न पूर्व से अप्राप्त है। यह वास्तव में प्राप्तस्य प्राप्ति है। शाश्वत सत्य की अनुभूति है। सत्य जो सर्वदा से है उसकी साक्षात् अनुभूति ही मुक्ति है। आत्मा स्वभावतः मुक्त है, इसे बन्धन की प्रतीति होती है। मोक्ष की अवस्था में किसी नए गुण का विकास नहीं होता है और नहीं किसी नए ज्ञान का अभ्युदय होता है। जिस प्रकार भ्रम की समाप्ति के बाद रज्जु सर्प के रूप में प्रतीत नहीं होती है, इसी भांति मोक्ष की प्राप्ति के बाद आत्मा को यह ज्ञान होता है कि वह कभी भी बन्धन की अवस्था में नहीं थी। आत्मा के वास्तविक स्वरूप के ज्ञान को ही मोक्ष कहते हैं।

Notes

Scanned by CamScanner

इस अवस्था में प्राप्त वस्तु ही पुनः प्राप्त होती है। 31 MON
मोक्षप्राप्ति के संबंध में अद्वैत वेदांत दर्शन में एक उपमा का प्रयोग किया जाता है। जिस प्रकार किसी के गले में पहले से ही हार है, लेकिन कण्ठगत हार को विस्मृत कर वह इधर-उधर उसे खोजता फिरता है, तथा अंत में जब अपने गले पर हाथ रखता है तो उसे हार की प्राप्ति होती है। मुमुक्षु को भी मोक्ष की प्राप्ति के लिए अन्यत्र भटकने की जरूरत नहीं, बल्कि स्वयं को समझने की जरूरत है। बन्धन अज्ञान के कारण होता है तथा इस अज्ञान को दूर करना ही मुक्ति है। जीव एवं ब्रह्म की भेद बुद्धि से उत्पन्न समस्त क्लेशों की निवृत्ति ही मुक्ति नहीं है बल्कि मोक्ष की अवस्था आनन्दस्वरूप है तथा ब्रह्म की अनुभूति है।

शंकर का मोक्ष संबंधी विचार बौद्ध दर्शन के निर्वाण से भिन्न है, क्योंकि शंकर के अनुसार मोक्ष निषेधात्मक एवं भावात्मक दोनों है, मोक्ष आनन्द स्वरूप है। न्याय-वैशेषिक के अनुसार मोक्ष की अवस्था में आत्मा अपने स्वाभाविक रूप में अचेतन है परन्तु शंकर ने इसे शुद्ध चैतन्य माना है। रामानुज ने कहा है कि मोक्ष की अवस्था में जीव ब्रह्म के समान प्रतीत होने लगता है न कि ब्रह्म हो जाता है जबकि शंकर के अनुसार यह ब्रह्म के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है।

Notes

Scanned by CamScanner